Chap-7

- सप्तम् अध्याय -

"राजनीतिक और आर्थिक जीवन-मूल्य"

"राजनीतिक और आर्थिक जीवन-मूल्य"

आमुख :-

प्रथम अध्याय में यह लक्ष्य किया जा चुका है कि राजनीति किसी देश या समाज को अनुशासित करती हुई, अर्थ व्यवस्था को संतुलित बनाये रखती है । इसके अन्तर्गत देश या समाज के व्यापक हित का ध्यान रखा जाता है । जैसाकि कहा जा चुका है कि राजनीति, राज्य की नीति या व्यवस्था या राजतंत्र प्रणाली से संबंधित होती है । इन्हीं अर्थों में राजनीतिक मूल्यों का अभिप्राय लिया जा रहा है । अत: देश सेवा, सहयोग, राष्ट्र एकता या प्रेम, त्याग, समानता, स्वतंत्रता, प्रजातंत्रात्मिक आदि मूल्य इसी के अन्तर्गत समाविष्ट होते हैं । द्वितीय अध्याय में राजनीतिक चेतना के अन्तर्गत यह स्पष्ट किया जा चुका है कि स्वतंत्रता पूर्व की राजनीतिक राष्ट्रीय भावना एवं देश प्रेम से ओत प्रोत थी । जनता व नेता दोनों का लक्ष्य था, स्वाधीनता प्राप्त करना । पूर्व युगीन राजनीति में व्यक्ति अपना निजी दृष्टिकोण न रखता हुआ नेता का अनुकरण करता था । स्वाधीनता के पश्चात् उद्देश्य में मूलभूत परिवर्तन के कारण राजनीतिक मूल्यों में भी व्यापक स्तर पर परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है ।

साठोत्तर कालीन राजनीति शनै: शनै: गांधी व नेहरू के आदर्शों को व्यवहारिक स्तर पर त्यागने लगी और विडम्बना यह रही कि देश की राजनीति को गुट निरपेक्ष तथा धर्म निरपेक्ष कहते हुए, स्वंय कई गुटों में विभक्त होकर सामाजिक जीवन-मूल्यों को उपेक्षित करती हुई, व्यक्तिवाद के सीमित दायरों में सिमट रही है । यही कारण है कि आज,राजनीति में, दल - बदल, व्यक्तिगत स्वार्थ, भाई भतीजावाद, भ्रष्टाचार आदि जोरों से पनप रहा है । आज का नेता, देश सेवा करने के नाम पर , सत्ता की भावना; धन लोलुपता और अवसरवादिता को अपना रहा है ।परिणामत: प्रान्तीयता, जातीयता, क्षेत्रवाद, भाषावाद, साम्प्रदायिकता, भाई भतीजा वाद आदि के माध्यम से व्यक्तिगत सामाजिक, धार्मिक ,नैतिक और स्वयं

राजनीतिक मूल्य भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके । साथ ही अर्थ व्यवस्था को असंतुलित बनाने में राजनीतिक गतिविधियों एवं परिस्थितियों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है । जैसाकि हम तीसरे और चौथे अध्याय में कह चुके हैं कि पूर्ववर्ती उपन्यासकारों ने अपनी कृतियों में यथार्थ रूप से राजनैतिक गतिविधियों का अंकन तो किया है, किन्तु वे आदर्शवादी भावना से मुक्त नहीं हो पाये हैं । युगीन उपन्यासकारों ने भ्रष्ट नेता तथा प्रशासनिक अनेक विषैली राजनैतिक परिस्थितियों, गतिविधियों का नग्न यथार्थ रूप से अंकन किया है ।

राजनीतिक - परिस्थितियों का अंकन एवं जीवन-मूल्य

"स्वतंत्रता प्राप्ति" देश की राजनीतिक का महत्त्वपूर्ण चरण है । देश ने नयी करवट बदली, संविधान की रचना हुई, जिसके साथ साथ राजनीति में अनेक परिस्थितियों का जन्म हुआ । जन जीवन में नयी जागृति आई । चुनाव प्रणाली ने व्यक्ति को राजनीति पर सोचने का सुअवसर प्रदान किया इस प्रकार राजनीतिक शहरों तक सीमित न रहकर गांव तक जा पहुंची । देश के कर्णाधारों ने स्वतंत्र भारत में अपने दायित्वों को निभाने का प्रयास किया । जनता की सुख समृद्धि के नारे लगाये जाने लगे -"भारतीय संविधान में न्याय, स्वतंत्रता, समानता, और भाई चारे की घोषण द्वारा स्वतंत्र भारत की इस आकांक्षा को साकार रूप प्रदान करने की चेष्टा की गई ।"[1] नव स्वतंत्र भारत की विशेष उपलब्धि भारत विभाजनोपरांत पाकिस्तान से आये हजारों शरणार्थियों को बसाना तथा देशी रियासतों को भारतीय संघ में मिलाना रहीं । सरदार बल्लभा भाई पटेल ने देश की बड़ी बड़ी रियासतों को राजनीतिक एकता को एक सूत्र में बांधने का कार्य किया और जवाहर लाल नेहरू ने वैदेशिक नीति का संचालन किया । महात्मा गांधी पहले ही राजनीति के अन्तर्गत सत्य और अहिंसा का आदर्श स्थापित कर चुके थे । इस प्रकार सन् 1960 ई० के पहले तक की राजनीति आदर्शपूर्ण थी, और अभी यथार्थ के धरातल पर उतर भी नहीं पाई थी कि 1962 ई० में चीन

व सन् 1965 ई0 में पाक भारत युद्ध के कारण राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को आघात पहुँचा और इन परिस्थितियों ने भारतीय जीवन-मूल्यों को सर्वाधिक प्रभावित किया ।

इसके साथ साथ भारतीय संविधान ने छूआछूत का भेद-भाव मिटाते हुए, समस्त नागरिकों को समानता का अधिकार प्रदान किया । धर्म निरपेक्षता स्वधर्म पालन व नारी के समानाधिकार के कारण व्यक्ति को अपना व्यक्तित्व खोजने का सुअवसर प्राप्त हुआ । इन समस्त प्रवृत्तियों ने देश की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक अध्यात्मिक आर्थिक और नैतिक जीवन-मूल्यों को प्रभावित किया । तत्पश्चात् प्रबुद्ध राजनीतिक वर्ग का ध्यान पीड़ित वर्ग, हरिजनों अनुसूचित जातियों, मजदूरों तथा किसानों और स्त्रियों की दुदर्शा की ओर आकर्षित हुआ । यही कहा जा सकता है कि आरक्षण का परिमाण बढ़ा दिया गया तथा नारियों पर होने वाले अन्याय और अनाचारों के विरूद्ध निरंतर जागृति पैदा की जाती रही । इसी प्रकार निम्न वर्ग तथा उच्च वर्ग के संघर्ष की आये दिन घटनाओं को काफी गंभीरता के साथ साथ कुछ विशेष राजकीय व्यवस्थाएं और अध्यादेश जारी हुए, जिससे उनके सामाजिक अस्तित्व की रक्षा हो सके ।

देश व समाज के उत्थान के लिए तथा अर्थ व्यवस्था सुधारने के लिए अनेक योजनाएं बनाई । किन्तु ये समस्त योजनाएं दूषित वातावरण के कारण आशानुकूल प्रतिफलित नहीं हो पाई । दलबंदी और राजनीतिक पैंतरेबाज़ी से देश का भविष्य संकटग्रस्त होने लगा । नेता एक दूसरे पर कीचड़ उछालते हुए, सत्ता प्राप्त करने की होड़ में कभी कभी अवांछनीय कार्यों में भी प्रवृत्त हुए । परम्परागत राजनीतिक मूल्यों -- त्याग, सेवाभाव, एकता, दया, न्याय, मानवता - आदि को ताक पर रखकर कर्तव्यच्युत, गैर ईमानदार तथा अवसरवादी बन गये हैं । इससे देश में अनुशासनहीनता, बेकारी, मँहागई, मुद्रास्फीति, भाई भतीजावाद आदि प्रवृत्तियां पनपने लगा । आज का नेता समाजवाद के

खोखले नारे लगाकर उद्योगपतियों की थैली में बिकने लगा और इन समस्त विसंगतियों, विद्रूपताओं और जटिलताओं को चित्रण समकालीन उपन्यासों में मिलता है ।

राजनैतिक परिस्थितियों को "माटी की महक" के मैनू काका के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया --" भाईयो, हम लोगों को पिछली बातें भूल जानी चाहियें । आज से हम लोग एक नई दुनिया में पहुंच रहे हैं । हम लोगों को आपस में मिल-जुलकर रहना चाहिये, महात्मा गांधी कहते हैं कि हिन्दुस्तान के हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई सभी इस देश के बेटे हैं ।"[2] यहां पर मैनू काका अन्य अनेक राजनैतिक परिस्थितियों से प्रभावित होकर मानवतावादी जीवन-मूल्यों को अभिव्यक्त करते हैं । आज का युग राजनीति प्रधान युग है । इसीलिए राजनीति के कारण शहर एवं गांव में सर्वत्र नई क्रान्ति दृष्टिगोचर है । राजनीति ने जहां जमींदारी प्रथा का उन्मूलन किया, वहीं दूसरी ओर निम्न वर्ग में राजनैतिक परिस्थितियों के कारण चेतना आई । राजनीति ने प्रथम प्रहार जमींदारी प्रथा पर किया -"जमनाना तेजी से बदल रहा है था । जमींदारी की पुश्तैनी पुख्ता दीवालें एक हल्के धक्के से ही जमीन पर आ रही ह देखते ही देखते करेता का पूरा माहौल बदल दिया ।"[3]

जैसाकि प्रारम्भ में निर्दिष्ट किया जा चुका है कि पूर्वकालीन राजनीति नाम मात्र को गांधी की दुहाई देती है । हरिजन नेता फैंकू ने स्वाधीनता के मधुर स्वप्न देखे, वह हरिजन सभा में भाषण देता हुआ कहता है -" गांधी जी कहते हैं सुराज मिलने पर हरिजनों का राज होगा ।"[4] समकालीन राजनीति परिस्थितियों के कारण गांधीवाद व्यंग्य का सूचक बन गया है -"जिसे देखो वहीं गांधी टोपी पर कूड़ा फेंक रहा है । और सालो ।,इसी टोपी का असर है कि थाना, नेता, अफसर, सभी को समझा बुझा कर काम करवा लेता हूं । वरना कही न तो स्कूल की इमारत पर छत पड़ती और न चमारों के लिए कुंआ बनता, न गांव गलियों में चव दान बनता । किस किस का काम नहीं सलटाया किसकी गवाही नहीं की । जब भी कचहरी, फौजदारी हुई,पब्लिक

के साथ खड़ा रहा, पर उसका कुछ नहीं , खरच,वरच के लिए बीस रूपया लिया उसकी खोज सभी साले करते हैं ।"[5]

इस प्रकार आज का नेता गांधी टोपी धारण करके अपनी स्वार्थ सिद्धि में लगा हुआ है । भोली-भाली जनता को बहलाकर रूपया ऐंठ रहा है । नेता स्वार्थ पूर्ति के लिए नारे-बाजी ,घेराव, जुलुस, हड़ताल,तालाबंदी आदि का सहारा ले रहा है । "जुलूस, हड़ताल, नारेबाजी ,घेराव तथा बंद जैसे आज के दैनिक जीवन की प्रक्रिया के अंग बन गये हैं...... । पुरानी मान्यताएं और परम्पराएं छिन्न भिन्न हो रहे हैं ।"[6] राजनीतिक विषम परिस्थितियों ने दैनिक जीवन तथा आर्थिक और राजनीतिक मूल्यों को प्रभावित किया है । सत्तारूढ़ नेता प्रचार प्रसार के साधनों का अनुचित प्रयोग कर, जनता को धोखा दे रहे हैं । दा-साहब मंत्री के रूप में मशाल समाचार पत्र पर रोक लगा कर, जनता के लिए समाचार अपने अनुकूल बदलवा लेते हैं । दा-साहब के इच्छानुसार कार्य करने वालों को परमिट मिल जाते हैं.... "दूसरे दिन मशाल नये तेवर पर आया ।"[7] इस प्रकार राजनीतिक परिस्थितियों ने लोकतांत्रिक मूल्यों पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया है । भ्रष्ट नेता दोहरी नीति अपना रहे हैं । तिमिरखान भ्रष्टनेता है - "भीतर से उतने ही रीति नीतियों के धनी कूटनीतिज्ञ हैं ।"[8]

"रिहर्सल" की रीना, और अविनाश की मानसिक चिन्ताएं राजनीति के कारण हैं । "हड़ताल अब एक फैशन की बात हो गयी है ।"[9] आज देश में ऐसे नेता उत्पन्न हो गये हैं जिन्होंने -"सारी नैतिकता को, सारी सच्चाई को उन्होंने, ताक पर पटक दिया है ।"[10] इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आज की राजनीतिक परिस्थितियों ने जीवन-मूल्यों को समग्र रूप से प्रभावित किया है । कहीं पर जीवन-मूल्य राजनीति से उत्पन्न चेतना के कारण टूटे हैं तो कहीं राजनीतिक भ्रष्टाचार के कारण । जाति-पाँति ऊँच-नीच के बंधन राजनीति के कारण मिटे हैं तो सामाजिक सद्भाव, मैत्री,मधुर संबंध, नैतिकता, देश प्रेम, आदि मूल्य भी उक्त राजनीति के कारण धूमिल हो चुके हैं ।

उपर्युक्त उपन्यासों के अतिरिक्त कमलेश्वर की काली आंधी, रांगेय राघव का आखिरी आवाज, विश्म्भर नाथ उपाध्याय का "रीछ" भीष्म साहनी का तमस आदि उपन्यास राजनीतिक असंगतियों तथा जटिलताओं से भरे हुए हैं । राजनीति का दलीय स्वार्थ ने राजनीतिक जीवन में सामाजिक नैतिक तथा राजनीतिक जीवन-मूल्यों को प्रभावित किया है ।

"दलीय -राजनीति"

यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि स्वतंत्र भारत में प्रत्येक व्यक्ति को राजनीति पर सोचने का अवसर प्रदान किया गया । साथ साथ चुनाव प्रणाली द्वारा जनता को अपना नेता चुनने का अधिकार मिला । इस प्रक्रिया ने राजनीति में विभिन्न दलों को जन्म दिया । प्रथम अध्याय में स्पष्ट किया गया है कि स्वतंत्रता पूर्व की राजनीति एक मात्र कांग्रेस दल की छत्रछाया में पल्लवित हो रही थी । इस दल के कर्णाधार गांधी, नेहरू, पटेल आदि नेता जैसे विद्यमान थे , जिनका मुख्य उद्देश्य जनजीवन में राष्ट्रीयता, देश सेवा , प्रेम, त्याग, कर्तव्यबोध, एकता, सहयोग, समानता, बंधुत्व आदि की भावना जागृत करना था । इस दल ने बिखरते हुए सद्यः भारत की बागडोर संभाली । विडम्बना यह रही कि जहाँ नेहरू निर्दलीय नीति के पक्ष में थे, वहीं उन्हीं के समक्ष देश में अन्य अनेक दल पनपने लगे । उनके समक्ष ही राजनीति में भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी, गुटबंदी ,भाई-भतीजावाद आदि प्रवृत्तियां बढ़ती गयीं । उक्त परिवेश में दलीय राजनीतिक मोड़ सर्वप्रथम नेहरू और टण्डन के मतभेद के रूप में उभरा । आचार्य कृपलानी ने कांग्रेस दल को त्याग कर "किसान मजदूर प्रजा पार्टी" का निर्माण किया । साथ ही आचार्य कृपालानी, डा० घोष, श्री पाद डांगे, आदि नेता इसमें सम्मिलित हुए । आचार्य नरेन्द्र देव ने सोशलिस्ट पार्टी का गठन करके, कांग्रेस पार्टी के प्रति विद्रोह की आवाज उठाई और उन्होंने देश की राजनीति में आदर्शवाद की प्रतिष्ठा की । कांग्रेस पार्टी के साथ साथ "मुस्लिम लीग" दल को संचालित करने वाले मुहम्मद अली जिन्ना और इकबाल थे । उन्होंने राजनीति में एकता, त्याग, समानता,मानवता आदि जीवन

मूल्यों पर बल दिया । सन् 1957 चुनावों में कांग्रेस पार्टी के प्रति विद्रोह की भावना उठने लगी और ऐसी विषम स्थिति ने अनेक दलों का जन्म दिया । सन् 1959 में चीन तिब्बत घटनाओं ने नेहरू के विश्वास को ठेस पहुंचाया और उनके विरुद्ध में आवाज आने लगी । सन् 1961 के निर्वाचन के दौरान चार राजकीय दल बने । कांग्रेस किसा मजदूर प्रजा पार्टी ,समाजवादी, साम्यवादी दल और जनसंघ ।

दलीय राजनीति का प्रथम मोड़ नेहरू व टण्डन के रूप में उपस्थित हुआ और आगे चलकर समाजवादी, साम्यवाद,' गरीबी हटाओ', भाषावाद,प्रान्तवाद आदि के आधार पर आज कई दल राजनीति में उपस्थित हैं । स्वंय कांग्रेस दो दलों में - कांग्रेस{इ},कांग्रेस{अर्स},जनता पार्टी, भारतीय जनता पार्टी, लोकदल ए०एम०डी०के०, भारतीय क्रान्ति दल, लोकतांत्रिक समाजवादी दल आदि विभिन्न दल आज के राजनीतिक मूल्यों पर प्रश्न चिह्न लगा रहे हैं । इसके अतिरिक्त - जातीयता व वर्गगत आधार पर व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं की टकराहट होने लगी । देश में भाषावाद, प्रान्तीयता एवं साम्प्रदायिकता आदि को लेकर परस्पर दलों में टकराहट होने लगी । प्रत्येक दल अपने विरोधी दल पर कीचड़ उछालता हुआ स्वंय को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने लगा । आरक्षण, नारी स्वतंत्रता, श्रमिक एवं मजदूर संघ, धर्म निरपेक्षता आदि राजनीतिक मोहरों का सहारा लेकर "दल" कुचालें चल रहे हैं । जिससे देश में विषम स्थिति उत्पन्न हो गयी है जिसका अध्ययन हम पीछे कर चुके हैं ।

"दलीय" नीति ने सर्वाधिक भोले भाले ग्रामीणों, अनपढ़ ,किसान, मजदूर तथा निम्न जाति के लोगों को पथभ्रष्ट किया है । इस दलीय, खींचा तानी में गांव में टूटन, घुटन, कड़ुवाहट, दायित्वहीनता ,मूल्यहीनता अकर्मण्यता आदि पनप रही है । इन विभिन्न दलों के कारण उत्पन्न विभिन्न विषम स्थितियों का चित्रण साठोत्तरी उपन्यासों में प्राय: मिलता है ।

आज की राजनीति विभिन्न दलों में विभक्त होकर सीमित हो गयी है । स्वतंत्रता पूर्व राजनीति आदर्शपूर्ण थी, सन् 1960 तक आते आते राजनीतिक

एकता, दायित्व, ईमानदारी, समानता, मित्रता आदि मूल्यों का पतन होने लगा । आधुनिक युग का व्यक्ति इससे अधिक जागृत होता गया, स्वार्थ लोलुपता की ओर अग्रसर होता गया और अनैतिकता को जीवन का मानदण्ड मानने लगा । आज व्यक्ति अपने अधिकारों के प्रति सजग होकर, संगठित जन शक्ति के आधार पर मजदूर छात्र, किसान और नौकर वर्ग आये दिन हड़ताल करते हैं। राजनीतिज्ञ उन्हें अपने स्वार्थ पूर्ति का साधन मान कर और भड़काते हैं । नेता सत्ता की होड़ में अनेक अनेक दलों का निर्माण करता है । आज उसका न कोई सिद्धांत है और न कोई आदर्श शेष रह गया है । "अपने लोग" का विश्वनाथ वर्मा और सूर्यनारायण, काली आंधी की मालती, आधा गांव हम्मद मियां, अपना मोर्चा आदि उपन्यासों के पात्र दलीय राजनीति से परिचित हैं । वे अपने स्वार्थ पूर्ति में परम्परागत जीवन-मूल्यों को नकारते हैं ।

युगीन उपन्यासों में दलीय राजनीति को जातिगत आधार पर चित्रित किया गया है । सुरेश सिन्हा कृत "पत्थरों का शहर" में विवेक कहता है कि - "आज की दलीय राजनीति में भाई भतीजावाद के आगे कोई चीज़ टिक नहीं सकती ।"[11] आज की राजनीति दल-बदलने का खेल मात्र रह गयी है । युगीन परिवेश में राजनीति का संबंध देश प्रेम, या देश सेवा से नहीं अपितु रूपयों की थैली से है । इस उपन्यास का पात्र राम भजन सिंह धनी किन्तु अनपढ़, भ्रष्ट कांग्रेसी नेता है । "ठाकुर राम भजन सिंह का कांग्रेस वर्किंग कमेटी में बोलबाला है । वे कई बार चुनाव हार गये हैं, जवाहर लाल का कहना है कि उनकी प्रतिमा देश के लिए अनिवार्य है, लोकतंत्र का मतलब यह नहीं कि जो चुनाव हार जाए उसे एक दम से सारी गतिविधियों से निर्वाचित कर दिया जाय ।"[12] "नितिन भी जनसंघ मे भाग लेता है"[13] कामरेड कृपा शंकर कम्युनिस्ट पार्टी के नेता हैं और मजदूर वर्ग के उत्थान के लिए साम्यवाद का नारा लगाते हुए कहते हैं - "फैक्टरी को तोड़ डालो, उसमें आग लगा दो, जो अफसर सामने आये, उसे हमेशा के लिए रास्ते के लिए हटा दो .... । रूस, चीन में देखो मजदूर किसानों का राज्य है या नहीं ... यहां भी आप ही लोगों का राज्य होना चाहिये ।"[14] इस प्रकार इस उपन्यास में आपसी लूट खसोट, कुचालों आदि का

वर्णन किया गया है और मार्क्सवादी विचारधारा के आधार पर परम्परागत जीवन-मूल्यों को नकार गया है । स्वार्थपरता का चित्रण मन्नू भण्डारी के "महाभोज" में भी मिलता है । दा-साहब, कांग्रेस पार्टी के मुख्यमंत्री हैं, जो राजनीति की साम-दाम,दण्ड, भेद आदि नीतियों में निपुण हैं । वे चुनाव के समय लाखन सिंह को सरोहा क्षेत्र से खड़ा करते हैं, और हरिजन बिसू की हत्या जोरावर जमींदार के हाथ करवा विरोधी दल को बदनाम करते हैं ।

युगगत परिस्थितियों ने राजनीति को न केवल शहरों में बल्कि गांव के घर घर में पहुंचा दिया है । ग्रामीण वातावरण भी दलीय राजनीति के कारण गुटबंदी का अखाड़ा बनता जा रहा है । "माटी की महक" का कालीचरण साम्यवादी दल का समर्थक है वह कहता है -"मैं गांधीवादी लोगों की तरह भीख की रोटी से इनका पेट नहीं भरना चाहता हूँ - मुझे क्रान्ति चाहिये ।"[15] "आखिरी आवाज़" में भ्रष्ट नेता कजौरी सिंह सरपंच और दारोगा एक गुट के होने के कारण निम्न वर्ग किसान हिरदेराम को सताते हैं । आज भ्रष्ट नेता ग्रामीण भोली भाली जनता को पैसे इत्यादि, का लालच देकर अपने पक्ष में कर लेते हैं । पत्थरों का शहर का ठाकुर राम भजन सिंह द्वारा "हरिजनों के क्षेत्र में दस-दस रूपयों की एक नोट और देसी ठर्रे की एक एक बोतल रातों रात बंट गयी ।"[16] इस प्रकार दलीय राजनीति ने बुद्धिजीवी वर्ग को भी अपने प्रभाव में समेटे हुआ है । यही कारण है कि सदियों से चले आ रहे हमारे आदर्श तथा जीवन मूल्य व सिद्धांत दलीय नीति के कारण अ टूटने लगे । "प्रश्न और मरीचिका" में उदय से शिवलोचन शर्मा सम्कालीन दलीय राजनीति का चित्रण प्रस्तुत करता हुआ कहता है -"न तो कोई पार्टी ही उभर पाती है कांग्रेस के मुकाबले, कम्युनिस्ट पार्टी दो टुकडों में टूट रही है । सोशलिस्ट पार्टी में आन्तरिक विद्रोह जोर पकड़े हुए है, जनसंघ साम्प्रदायिक पार्टी है ।"[17] अतः आज राजनीति का प्रमुख उद्देश्य सत्ता लेना है न जनता की सेवा और न देश उत्थान की मंगल कामना रखती है ।

उपर्युक्त दलीय राजनीति ने सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा

नैतिक मूल्यों को तोड़ा है जिनका चित्रण जिन्दाबाद:मुरदाबाद, टोपी शुक्ला, आधा गांव, कभी न छोड़े खेत, धरती धन न अपना, राग दरबारी, पानी के प्राचीर, सामर्थ्य और सीमा तथ जुलुस आदि उपन्यासों में भी मिलता है ।

उपर्युक्त विवेचन से यह दृष्टिगत है कि आज देश दलीय राजनीति का अखाड़ा बना हुआ है । इससे हमारे नैतिक, आर्थिक, व्यक्तिगत, सामाजिक तथा राजनीतिक मूल्य विघटित हो रहे हैं । यद्यपि दलीय राजनीति ने अपना स्वतंत्र दल बनाने अपना नेता चुनने का अवसर प्रदान किया था - किन्तु परिणाम सर्वथा विपरीत दृष्टिगोचर हो रहा है । जनता रूपये व दैनिक कठिनाईयों को दूर करने के लालच में भ्रष्ट नेता के चंगुल में फंस जाती है । आज की दलीय राज नीति का वास्तविक चित्र यह है -"राजनीति कुचक्र इसी सीमा तक बहुत भयावह हो गया है कि देश के जीवन से सिद्धांत और आदर्शों का लोप हो गया है । राजनीतिक दल बदल रोज सरकारों का बनना और गिरना मुख्य मंत्री से लेकर क्लर्क और चपरासी तक मची हुई लूटपाट नोंच खसौट एक विचित्र सी आपाधापी में आज मनुष्य बुरी तरह कुचला जा रहा है ।"[18] इस प्रकार दलीय राजनीति राजनैतिक तथा नैतिक मूल्यों को नकारती हुई दृष्टिगोचर है । इस दलीय नीति ने विभिन्न समसामयिक आन्दोलनों को जन्म तो दिया ही है साथ ही देश की अर्थनीति तथा जीवन-मूल्यों को प्रभावित किया है । आज के नता का न तो आदर्श है और न उसका कोई सिद्धांत है । इससे मानव मूल्य विघटित हुए हैं । यही कारण है कि युवा वर्ग के समक्ष उनके खोखले आदर्श तथा मूल्य नकारे जा रहे हैं । इस प्रकार मानव मूल्य विघिटित हुए और उनके स्थान पर कोई स्वस्थ मूल्य नहीं बन पाये ।

"आर्थिक जीवन और सम सामयिक आन्दोलन तथा जीवन-मूल्य"

प्रत्येक युग की राजनीतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों युगीन आर्थिक प्रतिक्रिया से प्रभावित होती रहती है । यही कारण है कि सामाजिक और राजनीतिक विकास आर्थिक वर्गों के सहज संघर्ष के आधार पर होते हैं । यह उल्लेखनीय है कि समसामयिक राजनीति तथा व्यक्तिगत मूल्यों में, जो

परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं, उनका मुख्य कारण अर्थ ही है । वैज्ञानिकीकरण ने अर्थ व्यवस्था को नये मूल्य दिये तथा मशीनीकरण और औद्योगीकरण ने परम्परागत अर्थ व्यवस्था के मूल्य तथा आयामों को परिवर्तित किया है ।

जैसाकि द्वितीय अध्याय में स्पष्ट किया जा चुका है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के समय देश के समक्ष अनेक सामाजिक ,राजनीतिक, एवं आर्थिक समस्यायें विद्यमान थी । इन समस्त संकटों को योजनाओं के माध्यम से सुलझाने का प्रयत्न किया गया । पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से देश का सर्वांगीण विकास करने का लक्ष्य रखा गया । इनका मुख्य उद्देश्य कृषि, उद्योग-धन्धे, बिजली, शिक्षा, ग्राम सुधार आदि के साथ साथ यातायात के साधनों का विकास करना था । इन्हीं योजनाओं के अन्तर्गत सरकार ने राष्ट्रीय बचत योजना बना कर राष्ट्रीय एवं प्रति व्यक्ति आय को सुधारने का प्रयास किया । "भारतीय सरकार का लक्ष्य है, प्रजातंत्रिक समाजवाद द्वारा जन जीवन को चौमुखी स्तर पर ऊपर उठाना"[19] इसमें भारतीय जन जीवन के हित व कल्याण की बात सोची गयी ।

इन पंचवर्षीय योजनाओं का कार्यक्रम अर्थशास्त्रियों ,पूंजीपतियों,मजदूरों किसानों तथा संसद सदस्यों आदि के विचार विमर्श के उपरान्त देश की जनसंख्या को ध्यान में रखकर, निर्धारित किया जाता है । स्वतंत्र भारत की प्रथम पंचवर्षीय योजना सन् 1951 से 1956 ई0,द्वितीय पंचवर्षीय योजना सन् 1956 से सन् 1961 और तृतीय योजना सन् 1961 से सन् 1966 की अवधि में बनी । तृतीय योजना के सम्पन्न होने में देश को अनेक आन्तरिक एवं बाह्य कठिनाईयों का सामना करना पड़ा । इस योजना की अवधि में सन् 1962 ई0 में चीन और सन् 1965 ई0 में पाकिस्तान से युद्ध का सामना करना पड़ा । परिणामत: तृतीय योजना में सुरक्षा पर व्यय तीन गुना अधिक करना पड़ा । जो राशि कृषि सुधार लघु उद्योग धन्धों व रोज़गार दिलाने आदि पर खर्च करनी थी, वह देश सुरक्षा पर खर्च की गई । इससे देश में बेरोज़गारी,आर्थिक विषमता, मंहगाई, वस्तुओं का अभाव, आवास की कमी आदि विकट

परिस्थितियां बलवती होने लगी । इसका प्रभाव देश की चौथी पंचवर्षीय योजना पर पड़ा । वह सन् 1969 से सन् 1974 ई0 अर्थात् तीन वर्ष देर से आरम्भ हुई । पांचवी पंचवर्षीय योजना सन् 1974 से सन् 1979 ई0 में आरंभ हुई । छठी पंचवर्षीय योजना सन् 1979 में प्रारम्भ होकर बीच असफल रही, इसे सन् 1981 में पुनः आरम्भ किया जा रहा है ।

इसमें कोई संदेह नहीं कि इन पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से देश का सर्वांगीण विकास हो रहा है । इतने कम समयमें बाह्यी संकटों के बावजूद भी देश में विज्ञान, उद्योग, कृषि, शिक्षा आदि क्षेत्र में आश्चर्यजनक उन्नति हुई है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव आर्यभट्ट और रोहिणी नक्षत्र हैं । फिर भी इतना अवश्य है कि इन योजनाओं का लक्ष्य जितना निर्धारित किया गया था,उनमें आशानुकूल सफलता प्राप्त नहीं हो सकी जिनका कारण बाह्य होने के साथ साथ आन्तरिक भी था । योजनाओं को कार्यान्वित करने वालों में नैतिक दृढ़ता व चारित्रिकता की कमी रही । योजनाओं की निर्धारित राशि में से आधी व्यय हो पाई शेष नेताओं की स्वार्थपूर्ति में लगी । साथ ही दैविक प्रकोप, तूफान, अतिवृष्टि ,अनावृष्टि ,बाढ़ ,अकाल आदि का भी प्रभाव पड़ा जिसका परिणाम यह हुआ कि आज देश पर कई हजार करोड़ रूपये का ऋण है । इन पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान ही अर्थ संतुलन बनाये रखने केलिए बैंकों का राष्ट्रीकरण किया गया ।

पंचवर्षीय योजनाओं में जहां बड़े बड़े उद्योग धन्धों के विकास में प्रोत्साहन दिया गया तो वहां ग्रामीण लघु उद्योगों को भी ध्यान में रखा गया । परन्तु ग्रामीण लघु उधोगों का समुचित विकास नहीं हो सका । यही कारण है कि गांव का किसान शहरों में जाकर मजदूर और श्रमिक बन गया । वहां वह शहरी वातावरण में जाति, सामाजिक रीति रिवाज, धार्मिक आचार विचार को शनैःशनैः त्यागने लगा । इससे भारतीय ग्रामीण परिवारों के आचार विचार, मर्यादा तथा व्यवहार में परिवर्तन आना स्वाभाविक हो

गया । औद्योगीकरण के विकास से भारतीय जन जीवन में नया परिवर्तन आया । वैज्ञानिक साधनों के कारण कृषि में दिनोंदिन उन्नति होने लगी । कृषि उत्पादन के नये साधनों ने ग्रामीण जीवन की काया ही बदल दी । साथ हीइन विज्ञान के साधनों ने ग्रामीण निम्न वर्ग किसान और श्रमिक को बेकार बना दिया और वे मजबूर होकर रोटी रोजी की तलाश में, शहर में आकर कल-कारखानों का मजदूर वर्ग बन गया । इससे हमारे प्राचीन जीवन-मूल्यों में भारी धक्का पहुँचा । यही नहीं मध्यवर्गीय शिक्षित युवक क्लर्क, बाबू, और अफसर वर्ग बन गया और उद्योगपति पूँजीपति वर्ग कहलाने लगा । उक्त समस्त परिस्थितियों ने सम - सामयिक जीवन में अन्य अनेक आन्दोलनों, कृषि सुधार आन्दोलन, निम्न वर्ग उत्थान आन्दोलन, नारी स्वतंत्रता आन्दोलन, मजदूर श्रमिक संघ आन्दोलन, नौकरशाही आन्दोलन तथा जनसंख्या कम करने के लिए परिवार नियोजन, छात्र आन्दोलन, आरक्षण आन्दोलन, मँहगाई आदि को जन्म दिया । यह कहा जा सकता है कि परम्परागत जीवन-मूल्य इन समस्त आन्दोलनों से प्रभावित हुए जैसाकि द्वितीय अध्याय में संकेत किया जा चुका है कि औद्योगीकरण शहरीकरण आदि ने भारतीय जन जीवन को प्रभावित किया । शहरों में नये नये कारखाने खुल जाने से नवीन समस्याएँ उत्पन्न होने लगी । जीवन जीने के लिए और पेट भरने के लिए भ्रष्टाचार, जमाखोरी, मुनाफाखोरी, रिश्वतखोरी आदि अनैतिक प्रवृत्तियाँ पनपने लगी । परिणामत: संस्कारों और आदर्शों पर चलने वाला समाज छिन्न भिन्न होने लगा, साथ ही नेता वर्ग पूंजीपत्तियों के इशारे पर नाचते हुए जनता के साथ खिलवाड कर रहे हैं । इस आर्थिक व्यवस्था से प्रभावित समसामयकि आन्दोलनों और उनसे विघटित जीवन-मूल्यों का चित्रण सन् 1960 के बाद उपन्यासों में अनेक विसंगतियों, विद्रूपताओं तथा जटिलताओं के साथ यथार्थरूप में चित्रित किया गया है ।

- उपरिनिर्दिष्ट विवेचन में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि सरकार ने पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत औद्योगिक,एवं शिक्षा के विकास के साथ साथ ग्राम विकास व सुधार की योजनाएं भी बनाई । "राग दरबारी" का शिवपालगंज

पंचवर्षीय योजनाओं की उपलब्धियों की ओर इंगित -इन्टरमीडिएट कालेज, सहकारी समिति, उचित दर की दुकान, थाना इत्यादि के द्वारा कर रहा है । पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत वैज्ञानिक विकास को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया जिसका प्रमाण गांव में भी परिलक्षित हो रहा है । आज गांव का नक्शा ही बदल गया है । "सूखता हुआ तालब" का देव प्रकाश इस तथ्य का समर्थन करता है -"गांव बड़ी तेजी से विकसित होकर आधुनिक हो रहे हैं । गांव गावं में ट्यूबवैल लग गये हैं । चारों ओर सड़के दौड रही हैं, जगह जगह सरकारी डिस्पेन्सरी खुली हुई हैं । शिक्षा का विस्तार हो रहा है, पंचायते हैं, चकबंदियां हो रही हैं, चारागाह बन रहे हैं, और सबसे बड़ी बात तो यह है कि गांव गांव आदमी भी अब अंध विश्वासों से ऊपर उठकर खुले दिमाग से समस्याओं को समझने बूझने लगा है ।"[20] पंचवर्षीय योजनाओं के प्रतिफलन से गांव विकास की ओर हैं -- आगे देवप्रकाश कहता है कि"गांव में आटे की चक्की चल रही है... अब इस गांव में एक दर्जन एम०ए० ,बी०ए० हो गये हैं । कोई नेता है, कोई वकील है, कोई प्रोफेसर है, कोई अध्यापक है ।"[21] अलग अलग वैतरणी का करैता गांव विकासोन्मुख है । "गांव बड़ी तेजी से विकसित होकर आधुनिक हो रहें हैं ।"[22] विशम्भर नाथ उपाध्याय कृत "रीछ" का चांदसी गांव वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण सुख सुविधा सम्पन्न हो गया है । "चांदसी विकास खण्ड में आ गया है । सहकारी बैंक मवेशी अस्पताल, बीज भण्डार के अतिरिक्त नयी मशीनें आ रही हैं । इनका केन्द्र भी सौभाग्य नगर ही होगा ।"[23]

वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा निःसंदेह श्रम और समय की बचत तो हुई है किन्तु खेतिहर किसान तथा निम्न वर्ग के मजदूरों को बेकार बनाकर शहरों में श्रमिक बनने पर विवश किया है । रोजी रोटी छिन जाने के कारण गरीब किसानों में कुंठा व तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गयी है । चूरामनपुर गांव का निर्धन किसान हरी अपनी पत्नी से कहता है -"अपने ही मालिक को देख लो न, कौन सी मशीन उन्होंने मंगवाई है । बिना बैल के चलती है और खेत जोतती है । खाली उसमें तेल डालते हैं लोग, और भड़ भड़ की आवाज होती है

खेती का काम इतना आसान हो गया है, अब बिन मजूरी के भी पेट न भरेगा ।"[24] इस प्रकार गांव में वैज्ञानिक साधनों के पहुंच जाने पर ग्रामीण किसान बेकार एवं आर्थिक संकट से टूट रहे हैं । उनके लघु उद्योग धन्धे बड़े बड़े कारखानों में विलय हो रहे हैं । आर्थिक अभाव एवं कमरतोड़ मंहगाई के कारण ग्रामीण जीवन नीरस तनाव युक्त एवं पारिवारिक संघर्षों से भरता जा रहा है। करैता गांव के किसानों की यही स्थिति है । "इस मंहगाई में .... कितने लोग हैं जिन्हें बजार सौदा सुलुक मंगवाना रहता है ? बस किसी तरह से जिन्दगी कर जाय यही बहुत है ।"[25]

यह उल्लेखनीय है कि बड़े बड़े उद्योगों के विस्तार के कारण गांव के लघु उद्योग धन्धे तथा कुटीर धन्धे नष्ट हो रहे हैं । गांधी जी ने जिन लघु उद्योग धन्धों तथा ग्राम विकास के मूल्यों पर जोर दिया था , आज वे बड़े बड़े उद्योगपतियों की राजनीति में आकर टूट रहे हैं । प्रश्न और मरीचिका में पूंजीपतियों पर व्यंग्य करते हुए कहा है -"वे बड़े पूंजीपति हैं सब के सब दिल्ली की तरफ दौड़ रहे हैं । सभी की जबान पर एक नारा है देश को सम्पन्न और शाक्तिशाली बनाने के पवित्र कार्यक्रम पर हमारा जीवन अर्पित है ।"[26] इस बढ़ते हुए औद्योगीकरण ने वर्ग विषमता को अत्यधिक बढ़ावा दिया है । इससे हमारे आदर्श, प्रतिमान, आचार विचार तथा व्यवहार में परिवर्तन आ रहा है । "....देश का औद्योगीकरण हो रहा है तेजी के साथ औद्योगीकरण के अर्थ है पूंजीवाद का विस्तार और प्रसार महात्मा गांधी का कुटीर उद्योगों वाला नारा गायब हो चुका है । आज युग में दानवाकार मशीनें सैंकड़ों आदमियों का कार्य कर सकती हैं, तब कुटीर उद्योग के नाम पर इस न्यूनतम उत्पादन और चीज़ों के बढ़े हुए मूल्यों के बल पर यह देश दुनिया के अन्य विकसित देशों के समकक्ष आने का सपना तक नहीं देखसकता है । "[27]

नये परिवेश में औद्योगीकरण ने जहां वर्ग वैषम्य तथा निम्न वर्ग के लोगों को पद दलित किया, वहीं राजनीति ने निम्न वर्ग के लोगों में अपने अधिकारों एवं मांगों के प्रति नवीन चेतना का प्रसार किया । इस प्रकार इन दोनों प्रवृत्तियों ने मिलकर समसामयिक आन्दोलनों को जन्म दिया । इन

आन्दोलनों का नेतृत्व नेतागण द्वारा ही होता है । विमल खेतिहर मजदूरों तथा किसानों को संगठित करके मार्क्सवादी सिद्धांतों के आधार पर पूंजीपतियों के प्रति आन्दोलन छेड़ता है । विमल कहता - "खेतिहर मजदूरों की मजदूरी बढ़ाइये, छोटे किसानों का उनके साथ संगठन बनवाईए और सरदारों के विरूद्ध व्यापक संग्राम छेड़िए "[28] इसी उपन्यास में मोहन कांग्रेसी नेता से कहता है - "आप मजदूरों की सभी मांगों को मंजूर कराईए और श्रेय लीजिये ।"[29] इस प्रकार वे पूंजीपतियों के विरूद्ध नारे लगवाते हैं । हड़ताल करते हैं ,और मजदूरों का जुलूस निकलवाते हैं । इस प्रकार आज का मजदूर मालिकों को चुनौती दे रहा है । इस वर्ग चेतना ने सामाजिक, व्यक्तिगत ;धार्मिक, नैतिक तथा राजनीतिक मूल्यों को व्यक्तिवादी तथा आर्थिक जीवन-मूल्य के आधार पर तोड़ा है ।

आर्थिक व्यवस्था और समसामयिक आन्दोलन और जीवन-मूल्यों का चित्रण , जल टूटता हुआ, कुछ जिन्दगियों बेमतलब, आधा गांव, सामर्थ्य और सीमा, काली आंधी, तमस, महाभोज, माटी की महक, जिन्दाबाद-मुरदाबाद पानी के प्राचीर आदि उपन्यासों में मिलता है ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह लक्ष्य किया जा सकता है कि यद्यपि पंचवर्षीय योजनाओं ने देश का विकास चौमुखी स्तर पर किया तो तथापि आदर्शहीन, सत्ता लोलुप राजनीति तथा आर्थिक विषमता के कारण इनका परिणाम आशनुकूल नहीं हो सका । परिणामत: साठोत्तर युगीन जीवन में समसामयिक आन्दोलनों के साथ साथ तनाव, कुण्ठा, अर्थाभाव, भ्रष्टाचार,टूटन घुटन आदि के कारण वैयक्तिक, सामाजिक,एवं नैतिक व राजनीतिक जीवन-मूल्यों पर विशेष प्रभाव पड़ा । राजनीतिक एवं आर्थिक टकराहट के कारण मानव-मूल्य टूट रहे हैं । कहा जा सकता है कि सम सामयिक आन्दोलन राजनैतिक आधार बन गये हैं । यही कारण है कि प्राचीन एवं नवीन जीवन-मूल्यों टकराहट का विषय बन गये हैं । नैतिक मर्यादा तथा जीवनादर्श नये रूप धारण कर रहे हैं । राजनीतिक जीवन ने जीवन-मूल्यों को गतिशीलता भी प्रदान की ।

"राजनीतिक जीवन के नये मोड़ और जीवन-मूल्य"

सन् 1947 का वर्ष भारतीय राजनीति का महत्वपूर्ण मोड़ कहा जा सकता है । सामन्तवादी पृष्ठभूमि में जनतंत्र का सूत्रपात हुआ, जैसाकि उल्लेख किया जा चुका है कि स्वाधीनता के पश्चात् भारत को नया संविधान बनाने, अपना नेता चुनने तथा प्रत्येक व्यक्ति को ,स्वतंत्र जीवन जीने का अवसर मिला इसका यह अर्थ नहीं कि भारत में राजनीति का सूत्रपात सन् 1947 में ही आरंभ हुआ, यह कहना उचित होगा कि भारतीय मुक्ति आन्दोलन में द्वितीय महा युद्ध की विशेष भूमिका रही । भारतीय जन मानस पर इस महायुद्ध का विशेष प्रभाव पड़ा । वस्तुत: इस युद्ध के कारण ही भारत सुषुप्त जनता में नव जागरण आया । किन्तु दूसरी ओर इन महायुद्धों के दुष्परिणाम को झेलना पड़ा - "सामाजिक अराजकता और मर्यादाहीनता की भीषण परिणति होती है विश्व युद्धों में, और मानव अपने में भंयकर खोखलापन और नैतिक दिवालियापन, अनुभव करने लगता है ।"[30] महायुद्धों ने नवीन विचार धाराएं ,नये चिन्तन तथा नये आयाम दिये । इससे समाज में निराशा, कुण्ठा, भय, संत्रास , अनास्था आदि दुर्बल प्रवृत्तियां उत्पन्न होने लगी जिन्होंने हमारे जीवन - मूल्यों के विशेष रूप से प्रभावित किया ।"द्वितीय विश्वयुद्ध तथा उसके परिणामों से उत्पन्न विश्व की परिस्थितियों ने भारतीय जनता के हृदय में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभाव डाला । राजनीतिक आर्थिक तथा सामाजिक परिवर्तनों ने जन मानस को झकझोर दिया और परम्परागत आदर्शों, मान्यताओं, जीवन-मूल्यों व आस्थाओं का विघटन हुआ ।"[31] इस प्रकार मूल्य विघटन और नवीन मूल्य का चित्रण साठोत्तरी उपन्यासों में अंकित हुआ है । युगीन उपन्यासों में प्रमुख रूप से सामाजिक अराजकता, मूल्यहीनता, अनैतिकता, खोखलेपन, अनास्था, राजनीतिक भ्रष्टाचार आदि का चित्रण मिलता है । उपरोक्त दो महायुद्धों के कारण भारतीय राजनीति में नवीन चेतना उद्‌भुत हुई ।

तत्पश्चात् स्वाधीनता के समय हुए देश विभाजन ने मानवता के साथ

साथ राजनैतिक मूल्यों को झकझोर दिया । "विभाजन के पश्चात् पाकिस्तान में अपनी पूरी सम्पत्ति तथा घर बार छोड़कर आने वाले सभी शरणार्थी विस्थापन जन्य परिस्थितियों में समान बन गये । जाति,उप जाति, धन, सम्पत्ति का भेदभाव स्वत: मिट गया । और एक नई समाज व्यवस्था का विकास हुआ । विभाजन जनित असंतुलन ने मूल्यों को प्रभावित किया ।"[32] तदन्तर राजनीतिक तृतीय मोड़ सन् 1962 में हुए अकस्मात् चीन आक्रमण से उपस्थित हुआ । इससे भारतीय आदर्शवादी राजनीति यथार्थ की भूमि पर उतरी और मानवता तथा एकता के मूल्यों को आघात पहुँचा । जब हिन्दी-चीनी भाई भाई का नारा बुलन्द करने वाले चीन ने एकाएक आक्रमण किया तो प्रधानमंत्री नेहरू की आँखें खुली और उनके आदर्शवाद तथा पंचशील नीति को गहरा आघात पहुँचा ।

तदुपरांत सन् 1965 ई0 में भारत को पाकिस्तान के साथ विवश होकर युद्ध करना पड़ा । परिणामत: भारतीय राजनीतिक मूल्य विघटित हुए । राजनीति में अविश्वास व भ्रष्टाचार का जन्म हुआ । इन दो युद्धों ने सद्य: स्वतंत्र भारत की अर्थ व्यवस्था को डाँवाडोल बना दिया । फलत: इससे समाज में भ्रष्टाचार, भाई भतीजावाद, तस्करी, पक्षपात, मिलावट, जमाखोरी, मँहगाई, बेकारी, साम्प्रदायिकता आदि विकृत तत्व राजनीति में उभरे । जिनका प्रभाव हमारे समसामयिक जीवन मूल्यों पर पड़ा । सन् 1971 ई0 में बंगला देश से आये लाखों शरणार्थियों के कारण भोजन व आवास समस्या और अधिक बढ़ गई जिसका प्रभाव हमारी पँचवर्षीय योजनाओं पर पड़ा । 26 जून 19775 में इन्दिरा गांधी द्वारा आपात स्थिति लागू करने से भारतीय लोकतांत्रिक मूल्यों पर प्रश्न चिन्ह लगा । एतदर्थ भाई चारे, सद्भाव, एकता, सहयोग, मानवता, स्वतंत्रता, न्याय, प्रजातंत्र आदि राजनीतिक मूल्यों को आघात लगा । वैज्ञानिक प्रगति तथा राजनीतिक उथल पुथल के कारण परम्परागत मूल्य धूमिल पड़ने लगे हैं ।

उपरिनिर्दिष्ट विवेचन के आधार पर यह लक्ष्य किया जा सकता है कि द्वितीय महायुद्ध , भारत, पाक विभाजन, चीनी और पाक आक्रमण तथा बंगला देश के कारण विषम राजनीतिक घटनाचक्रों से अन्य अनेक नये मोड़ प्राप्त हुए । जिनका चित्रण समकालीन उपन्यासों में मिलता है ।

भारत और पाकिस्तान के बन जाने के बाद भी पाकिस्तान की कुदृष्टि काश्मीर पर जमी हुई है । वह काश्मीर का मामला जब तब उठाकर युद्ध करता है । उसका मुख्य ध्येय यही है कि किसी तरह भारत को अपने में विलय करले, किन्तु हर बार उसे मुंह की खानी पड़ती है । "प्रश्न और मरीचिका" का लक्ष्य इस तथ्य को स्पष्ट करता है -"क्या काश्मीर के मसले को लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच फिर किसी युद्ध की संभावना है ? पाकिस्तान एक बार युद्ध में पराजित हो चुका है ,इस बार वह युद्ध करेगा तो मिट जायेगा ।"33 पाकिस्तान विभाजन से प्रभावित होकर कश्मीर का मुख्य मंत्री शेख अब्दुल्ला भी काश्मीर को अलग राज्य बना चाहता है । इस प्रकार कहा जा सकता है कि युद्धों से उत्पन्न आर्थिक विषम वस्तु अभाव भ्रष्टाचार आदि के कारण सर्वत्र मूल्यहीनता मानव संबंधों में शून्यता "वे दिन" अपने अपने अजनबी, छोटे छोटे महायुद्ध, रिहर्सल ,युद्धबंदी आदि उपन्यासों में परिलक्षित हो रहे हैं ।

युद्ध से उत्पन्न विषम परिस्थितियों के कारण राजनीति में एक नया मोड़ उपस्थित हुआ और साथ ही साथ भारतीय परम्परागत, व्यक्तिगत, सामाजिक ,राजनीतिक तथा नैतिक मूल्य टूटे हैं । इस युद्ध प्रक्रिया ने भारतीय वैदेशिक नीति को भी प्रभावित किया । प्रश्न और मरीचिका ,तमस,सर्वनाश, युद्धबंदी आदि उपन्यासों में राजनीति जीवन के नये मोड़ और उनसे विकसित जीवन मूल्यों का अंकन किया है ।

"विदेश नीति और तज्जन्य जीवन मूल्य"

जैसाकि स्पष्ट किया जा चुका है कि वैज्ञानिक युग में संचार साधनों का व्यापक स्तर विकास हो जाने के कारण विश्व के राष्ट्र एक दूसरे के संपर्क में आ रहे हैं और विश्व राष्ट्रों में परस्पर अलगाव की भावना तिरोहित होती जा रही है । किसी भी देश की घटना का प्रभाव विश्व के अन्य देशों पर स्पष्टरूपेण देखा जा सकता है । इस प्रकार आज अन्तर्राष्ट्रीय संबंध सभी देशों की राजनीतिक प्रक्रिया के लिए महत्वपूर्ण आयाम बन गये हैं । दो महायुद्धों के उपरांत अन्तर्राष्ट्रीय नीति का माध्यम सम्मेलन,बैठक व संधि रहा है ।

पूर्ववर्ती पृष्ठों में यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् भारत का स्वतंत्र राजनीतिक दृष्टिकोण बना, और द्वितीय महायुद्धोत्तर भारत की स्वतंत्रता ने अफ्रीका तथा एशिया के देशों में नवीन राजनीति चेतना और जागरूकता उत्पन्न की । इसी कारण इन देशों का प्रेरणास्रोत बन गया ।[34] भारत विभाजन के पश्चात् पाकिस्तान को विदेशी अस्त्र शस्त्र दिये जाने लगे तदन्तर पाकिस्तान को "साउथ ईस्ट एशिया ट्रीटी आरगेनाइजेशन" {सीटो} और सेंट्रल यूरोपियन ट्रीटी आरगेनाइजेशन {सेनटो} जैसे सैनिक गुटों का सदस्य बना लिया गया था, भारत को अपनी वैदेशिक नीति के क्षेत्र में फूंक फूंकर कदम रखना आवश्यक हो गया । इस दृष्टि से भारतीय ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परम्परा का आदर्श सामने आया, क्योंकि भारत ने अपने सम्पूर्ण इतिहास में किसी दूसरे देश पर न तो सशस्त्र आक्रमण किया था और नएसे हड़प जाने की चेष्टा की थी उसने हमेशा "जिओ और जीने दो" की नीति में विश्वास किया, मैत्री भाव और सहिष्णुता में आस्था रखी । फिर महात्मा गांधी भी सत्य और अहिंसा का अपना आदर्श देश के सामने रख चुके थे । प्रारम्भ में जवाहर लाल नेहरू इसी आदर्श से प्रेरित थे । गांधी जी की भांति उनका भी विश्वास था कि द्वितीय महायुद्ध पश्चात् भारत को अपने संदेश की ज्योति से संसार के अंधकार पूर्ण जीवन को जगमगा देना और साम्राज्यवाद द्वारा पीड़ित उपनिवेशों में आशा का संचार करना है ।"[35]

किन्तु निर्दलीय नीति मुस्लिम देशों व दक्षिण पूर्वी एशिया को तथा अन्य सांस्कृतिक कारण से अफ्रीका के देशों में उसे संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है । तदउपरांत भारत को मध्यम कोटि के देशों - कनाडा, फ्रांस, ब्रिटेन जर्मनी ,जापान आदि से मैत्री भाव प्राप्त करने में सफलता मिली है । द्वितीय महायुद्ध के पश्चात संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई और भारत ने उसकी सदस्यता ग्रहण की । तदन्तर अन्य देश भारत व पाकिस्तान में अपना प्रभुत्व जमाने की कोशिश में लगे हैं । इस कारण धार्मिक भेदभाव, वैदेशिक नीति में बाधा उपस्थित किये हुए हैं । आज भी अन्य राष्ट्र पाकिस्तान को उकसा

रहे हैं । जिससे भारत देश का भविष्य आशंकित बना हुआ है । भारत संयुक्त राष्ट्र संघ के - मानव विकास, मानव स्वतंत्रता और विकास शान्ति, एकता, एदभाव, आदि जीवन-मूल्यों का समर्थन करता है । साथ ही शोषण अत्याचार आदि का उसने विरोध किया है । बंगला देश की स्वतंत्रता और वियतनाम को मान्यता देना इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं किन्तु इसके फलस्वरूप कई देशों से कठिनाईयों तथा शत्रुता का सामना करना पड़ा है । अधुनातन भारत का यही लक्ष्य है कि एशिया के देशों को उसका अनुसरण करते हुए बहुल राष्ट्र संघ का निर्माण करना ।

अत: वैदेशिक नीति का प्रतिबिम्ब समकालीन कुछ उपन्यासों में यत्र तत्र मिलता है । प्रश्न और मरीचिका तथा अमृत और विष उपन्यासों में इसका अंकन मिलता है । यह भी कहा जा सकता है कि युगीन उपन्यासों में वैदेशिक नीति का अंकन प्रधानत: नहीं मिलता है । फिर भी वैज्ञानिक संचार के कारण कोई भी देश विदेशी प्रभाव से अछूता नहीं रह सका है । मुख्यत: युगीन स्वार्थपूर्ण राजनीति ने देश में साम्प्रदायिकता की भावनाओं को बढ़ावा देकर अहिंसा, समानता, मानवता ,एकता, बंधुत्व आदि जीवन-मूल्यों पर कुठाराघात किया है ।

"साम्प्रदायिक समस्या और मूल्य विकास की भूमियां"

साम्प्रदायिक दंगों का मुख्य कारण धर्म है । धर्म के संकुचित दायरों के कारण ही संसार में बड़े बड़े संघर्ष हुए हैं । और आज भी हो रहे हैं । आजादी के समय हिन्दू-मुसलमानों का साम्प्रदायिक दंगा ज्वलंत उदाहरण है । साम्प्रदायिकता के कारण लाखों निरपराध हिन्दू व मुसलमानों को मौत के घाट उतार दिया गया और मानवता एवं नैतिकता एक कोने में पड़ी सिसकती रही । इसके आधार पर शान्ति, अहिंसा, दया, सहानुभूति, त्याग, सदभाव, भाईचारे, सच्चाई, धार्मिक एकता, आदि के मूल्यों को नकारा गया ।

यह उल्लेखनीय है कि भारतीय संविधान में भारत को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया और साथ ही स्वधर्म पालन का अधिकार प्रत्येक नागरिक को

प्राप्त हुआ । विशाल भारत जो बाहर से एक जाति व धर्म निरपेक्ष राज्य प्रतीत होता है, वह अन्दर ही अन्दर साम्प्रदायिक वैमनस्य की भावना से सुलग रहा है । साम्प्रदायिकता का विष भारत को नष्ट करने पर तुला है । भारत विभिन्न धर्मों, भाषाओं, जातियों के समूह में विभक्त हो चुका है । आधुनिक भारत में साम्प्रदायिकता तीन रूपों में विद्यमान है । प्रथम उत्तर व दक्षिण के आधार पर , द्वितीय जातीयता के आधार पर, और तृतीय हिन्दी-मुस्लिम धार्मिक भावना के वैमनस्य के कारण । आज भाषावाद का प्रश्न भी सामने आने लगा है । इसप्रकार निरपेक्ष राष्ट्र भारत में जगह जगह खाईयाँ बनती जा रही हैं । राष्ट्रीय एकता, आज का आकर्षक किन्तु खोखला नारा बन कर रह गया है । संकीर्ण स्वार्थ के घेरों में सहयोग, साहचर्य, शान्ति,परोपकार, देश प्रेम, तथा मानवीय मूल्य को आघात पहुँच रहा है । देश की एकता तथा शाक्ति छिन्न भिन्न हो रही है ।

गाधी जी ने अनशन, सत्याग्रह आदि के द्वारा "साम्प्रदायिकता एकता" की प्रतिष्ठा का प्रयास किया जिसके परिणाम स्वरूप कुछ समय के लिए लोगों के मस्तिष्क तो बदले किन्तु हृदय न बदल सके । साम्प्रदायिकता के कारण ही गांधी जी की निर्मम हत्या की गई । आज की छिछली राजनीति में साम्प्रदायिकता एक अँग बन गई है । भ्रष्ट नेता सत्ता प्राप्ति करने व स्वार्थ निहित इन दंगों को बढ़ावा दे रहे हैं । आधुनिक भारत में साम्प्रदायिक दंगे जातिगत आधार पर कम, बल्कि धर्म के नाम पर अधिक हो रहे हैं । राजनीति के कारण दिनोंदिन संघर्ष बढ़ते जा रहे हैं । भारत में कुछ राजनीति दलों का प्रादुर्भाव ही साम्प्रदायिकता के परिणामस्वरूप हुआ है - हिन्दू राष्ट्रवादी, मुस्लिम लीग, जनसंघ, नक्सलवादी इत्यादि ।

आज का नेता एकता, भाई-चारे व सहयोग का खोखला भाषण देता हुआ स्वार्थवश इन दंगों में भाग ले रहा है । हाल ही (1980 ईद के मौके पर) में हुआ हिन्दू -मुस्लिम दंगा इसका उदाहरण है । इस प्रकार समस्त देश में साम्प्रदायिकता का विषैला वातावरण व्याप्त है । इससे परम्परागत जीवन-

मूल्य, भाई चारे, सहयोग, एकता, मैत्री, अहिंसा , सेवाभाव आदि मूल्य धूमिल हो रहे हैं, जो प्रजातंत्र के साथ साथ मानवता के लिए भी खतरनाक सिद्ध हो रहे हैं । इन्हीं साम्प्रदायिकता का चित्रण साठोत्तर उपन्यास में मिलता है । समकालीन उपन्यासों में इसके बहुरंग दृष्टिगोचर हैं । हिन्दू मुस्लिम भावना से प्रेरित साम्प्रदायिक दंगों का अंकन "प्रश्न और मरीचिका" में मिलता है । जनार्दन सिंह साम्प्रदायिकता का कारण राजनीति मानता है । वह कहता है-"आप अपने को वोटों को लों । आप मुसलमान वोटों के कारण ही जीते हैं । यानी आपने जीतने के लिए मुहम्मद शफी को बुलाकर,आपको हिन्दू मुसलमानों के भेदभाव का सहारा लेना पड़ा है । आपकी पार्टी ने मुसल मानों की संस्कृति और भाषा की रक्षा का नारा लगाकर उनके वोटों को प्राप्त करना चाहा...... पार्टी के हितों और स्वार्थों को ध्यान में रखकर हरेक पार्टी फिर से साम्प्रदायिकता और जातिवाद को बढ़ावा दे रही है ।"[26] आज की छिछली व दोहरी राजनीति में नारे एक जनता को लुभाने व भुलावे मात्र के लिए रह गये हैं । नेता वोट प्राप्त करने के लिए नित नये नारे लगा रहा है । इसी उपन्यास में इस तथ्य का स्पष्टीकरण मिलता है -" और साम्प्रदायिकता एकता का यह नारा कितना झूठा साबित हुआ । देश के दो टुकड़े हो चुके हैं ,एक हिन्दुस्तान है और दूसरा पाकिस्तान है । कत्ले आम शुरू हो गये हैं । करोड़ों आदमियों की अदलाबदली हो रही है पंजाब में । इस तिरंगे में उसी साम्प्रदायिकता की परिकल्पना है ।"[37]

साम्प्रदायिकता के कारण मानवता व नैतिकता एक कोने में पड़ी आंसू गिरा रही है । भाई चारे के साथ साथ सामाजिक, राजनैतिक जीवन-मूल्य भी टूट रहे हैं । धार्मिक बाह्याडम्बरों ने दंगों में घी का काम दिया है । "अमृत और विष" का नवाब साहब स्वीकार करता है कि -"ये मजहबी अलगाव का ऊपरी एहसास आपस में नफरत फैलाता है ।"[38] आधुनिक स्वतंत्र भारत में साम्प्रदायिकता से धार्मिक संकीर्णता, जातीयता की भावना,राजनीतिक गतिविधियाँ और विभिन्न दलों का संघर्ष समाज में बराबर बना हुआ है । और उससे उत्पन्न पाशविकता से मानवता और परम्परागत मूल्य खटाई में पड़े हुए

हैं । इसका यथार्थ चित्रण "पत्थरों का शहर" में चित्रित है- "दूर मुसलमानों की एक टोली जमा थी । उनमें से कोई मुसलमान गली का न था । वे सब पाकिस्तान ज़िन्दाबाद के नारे लगा रहे थे और एक ऊँचे बाँस पर तिरंगा झण्डा फाड़कर जूतों में बांध रखा था और रस्सी में फांसी के फंदे की तरह एक नंगी औरत को लटका दिया था । उसके दोनों हाथों में चूड़ियां थीं और मांग में सिंदूर का टीका लगा हुआ था । वह हिन्दू औरत थी । उसके दोनों स्तन कटे हुए थे और ख़ून की धारा बह रही थी । "[39] इस प्रकार हिन्दू-मुस्लिम में आपसी बैर भाव के साथ बदला लेने की भावना भी धधक रही है । "अब हिन्दू बदला लेने पर उतारू हो गये हैं ... मियां वाली गली पूरी की पूरी जल कर राख हो गई है ।"[40] राजनीति और अधिक इन दंगों को प्रोत्साहित कर रही है । वोटों का लालच, सत्ता लोलुपता, पार्टी हित व स्वार्थ भावना आदि के कारण साम्प्रदायिकता के माध्यम बनाया जा रहा है । विवेक कहता है - "अब राजनीतिक साम्प्रदायिक दंगों में आदमी की जान की कोई भी कीमत नहीं रही है ।"[41] समय समय पर भारतीय समाज में हिन्दू मुसलमान एकता के नारे लगाये जाते हैं तो दूसरी ओर साम्प्रदायिकता के संकीर्ण क्षेत्र में भीषण रक्तपात होता है । व्यक्तिगत स्वार्थों के हित में भी साम्प्रदायिकता का जन्म हुआ है । इससे पारिस्परिक मूल्य तथा प्राचीन मूल्य टूटरहे हैं । और सहयोग, एकता, सद्भाव तथा भाई चारे के मूल्यों का विघटन हुआ है ।

साम्प्रदायिकता के प्रति "पत्थरों का शहर" का विवेक नये दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है । "हिन्दू होने का मतलब इस्लाम को ख़त्म करना नहीं, इस देश का सही और ज़िम्मेदार नागरिक बनना है , जो हिन्दुस्तान में रहते हैं, सबके धर्म अलग अलग हो सकते हैं, लेकिन जाति एक ही होगी ।"[42] विवेक का प्रगतिशील दृष्टिकोण ही देश को साम्प्रदायिक दंगे से रक्षा कर सकता है । देश में व्यक्तिगत धर्म होंगे, किन्तु जाति एक होगी तो देश प्रेम, समानता, न्याय, जन कल्याण, दायित्व, अहिंसा, मानवता, सुरक्षा, भाई चारे का संबंध स्थापित हो सकता है । सहयोग और एकता के कारण ही नये मूल्यों के विकास की भूमियां तैयार हो सकेंगी ।

इस विवेचन से यह लक्ष्य किया जा सकता है कि देश में साम्प्रदायिकता राष्ट्रीय हित, उत्तरदायित्व ,एकता और देश प्रेम के लिए घातक सिद्ध हो सकती हैं । इसीलिए व्यक्तिगत स्तर पर फैली वैमनस्य,ईर्ष्या, तथा आपसी द्वेष को त्यागना ही साम्प्रदायिकता की संकीर्णता से ऊपर उठना है । समाज में त्याग और परोपकार व सद्भाव की आवश्यकता है । जातीयता, क्षेत्रीयता भाषावाद, भाई भतीजावाद व धार्मिक कट्टरता आदि भाव मानव मूल्यों के लिए घातक सिद्ध हुए हैं । मानवता की भावना ही व्यक्ति मात्र का सुख तथा शान्ति बन सकती है । विज्ञान प्रगति के कारण बाह्य आज हम जितने करीब आ रहे हैं, मानसिक रूप में उतने ही दूर भाग रहे हैं । समकालीन राजनीतिक व आर्थिक क्षेत्रों में साम्प्रदायिकता पनपने लगी है । देश में मारकाट, हिंसा, आदि प्रधान अंग बन गया है । व्यक्ति, व्यक्ति का शत्रु बना बैठा है । जब तक भारतीय जन जीवन से वैमनस्य और आपसी विद्वेष की भावना का न होगा तब तक देश में मानवता, शान्ति, जन कल्याण, सहयोग व एकता के नए मूल्य स्थापित नहीं हो सकेंगे और न ही मूल्य विकास की नयी भूमियां तैयार हो सकेंगी । अतः हमें नये प्रगतिशील दृष्टिकोण अपने होंगे और साम्प्रदायिक भेदभाव त्यागने होंगे और परस्पर सद्भाव, प्रेम, एकता, शान्ति ,क्षमा,दया, अहिंसा व मैत्री भाव को ग्रहण करना होगा । इससे देश का प्रजातंत्र सुरक्षित रह सकेगा ।

इन अतिरिक्त साम्प्रदायक समस्या को लेकर चलने वाले - तमस,माटी की महक ,समयसाक्षी है, रिहर्सल आदि उपन्यासों में साम्प्रदायिक समस्या और मूल्य विकास की भूमियां का चित्रण किया गया है । आज साम्प्रदायिकता का रूप राजनीति ने ले लिया है और देश इसकी आग में जल रहा है । यही कारण है कि युगीन परिवेश में हमारे व्यक्तिगत, समाजगत, आध्यात्मिक ,धार्मिक आर्थिक, राजनीतिक तथा नैतिक जीवन-मूल्यों का पतन हो रहा है । युगीन राजनीतिक चेतना ने जहां एक ओर जनजीवन को जागृति किया, वहां इसने हमारे आदर्श, कुल मर्यादा, मान्यता तथा नैतिका मूल्यों को विघटित किया ।

"राजनीतिक चेतना का स्वरूप तथा मूल्य विघटन"

आज राजनीतिक का युग है । फलतः आज भारतीय जन जीवन में राजनीति सामान्य चर्चा का विषय बनी हुई है । यह कहना समीचीन होगा कि स्वाधीनता के पश्चात् ही भारतीय राजनीति चेतना बहुविध रूपों में परिलक्षित हो रही है । जैसाकि उल्लेख किया जा चुका है कि चुनाव प्रणाली ने व्यक्ति को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया । व्यक्ति अपने मताधिकार तथा मतदान का महत्त्व समझकर उपयोग कर रहा है । लोकतंत्र की भावना के कारण उसे स्व अस्तित्व बोधका ज्ञान हुआ है । आज की राजनीति न केवल शहरों में अपितु भारतीय ग्रामों में अपना प्रभुत्व जमा रही है । यही कारण है कि साठोत्तर के बाद परिवर्तित राजनीति ने भारतीय जन जीवन की आन्तरिक संरचना को विशेष रूप से प्रभावित किया है जिसका प्रभाव युगीन भारतीय जन जीवन पर अत्याधिक पड़ा है । राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में जन-जीवन और अधिक जटिलताओं तथा अन्य विसंगतियों का शिकार होता जा रहा है । इस प्रकार राजनीतिक चेतना से देश में एक नयी भाव क्रान्ति आई और परम्परागत जीवन मूल्यों को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकी ।

युगीन स्थिति में राजनीतिक स्तर पर कार्यकर्त्ताओं तथा नेताओं द्वारा अनेक समितियों, किसान सभाएं ग्राम सभाएं, ग्राम पंचायतें, यहां तक कि हरिजन सभाएं आदि बन रही हैं । इन सभाओं ने अनपढ़ ग्रामीण जनता में नवीन चेतना एवं नवीन चिन्तन की लहर जागृत की है । समकालीन जीवन में राजनीति केवल शासनतंत्र तक ही सीमित नहीं रह गयी है । अपितु इसने समाज धर्म, जाति, वर्ग एवं संबंधों को भी प्रभावित किया है जिसके फलस्वरूप मानव-मूल्य टूट रहे हैं । छिछली राजनीति से उत्पन्न भ्रष्टाचार, दलबंदी, रिश्वत खोरी, तस्करी, जमाखोरी, मुनाफाखोरी, भाई भतीजावाद आदि दुष्प्रवृत्तियों ने जनजीवन को घुटन, निराशा, मूल्यहीनता, अविश्वास और अनिश्चिता के जाल में फंसा दिया है । दूसरी ओर राजनीतिक का एक उज्ज्वल पक्ष भी रहा है । जिसने दलित एवं निम्न वर्ग , जो सदियों शोषण का शिकार बने हुए थे, उन्हें

स्व अधिकारों के प्रति नयी चेतना प्रदान की है । साथ ही अशिक्षित ग्रामीण व्यक्ति के मन और मस्तिष्क को नयीवैचारिक शक्ति प्रदान की । जिसके कारण ग्रामीण जीवन-मूल्यों पर प्रश्न चिह्न लगवाया है । राजनीतिक चेतना की इस बनती बिगड़ती छवि को उपन्यासों में विभिन्न प्रकार से उभारा गया है ।

समकालीन राजनीति में जितना परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है,शायद उतना पूर्ववर्ती युग में नहीं । आये दिन की राजनैतिक दांव-पेचों के बीच सामान्य जीवन स्तर का व्यक्ति अनेक यातनाओं का शिकार होता जा रहा है । मन्नू भण्डारी के उपन्यास "महाभोज" में राजनीतिक दांवपेचों को यथार्थ के साथ चित्रित किया गया है । आज का सामान्य व्यक्ति भी राजनीति हथकण्डों को भली प्रकार समझने लगा है । बिन्दा, अपने मित्र बिसू राजनीतिक हत्या के मामले में गवाही देता हुआ कहता है -" मैं यही कहता था कि अब कुछ नहीं होने का... जब सरकार ही सारी बात को दाब ढांक रही है , तो मेरे-तेरे भाग-दौड़ करने से क्या होगा ? जैसी यहाँ की सरकार वैसी ही दिल्ली की सरकार । हमने तो सब देख लिया साहब । सब एक हैं ।"[43] आज हरिजन वर्ग में इस प्रकार राजनीति के कारण चेतना आई है । "माटी की महक" का निम्नवर्गीय मैनू काका, पत्थरों का शहर का छज्जु राम, अलग अलग वैतरणी का झिनकू आदि निम्न वर्गीय पात्र राजनीतिक चेतना के कारण स्व अस्तित्व और आत्म प्रतिष्ठा आदि की भावना से ओतप्रोत दिखाई देते हैं । "रीछ" का विमल कहता है कि-"सभा में दण्ड देने का अधिकार ग्राम सभा को होना चाहिये । सामन्तशाही या तानाशही का युग समाप्त हो गया है ।"[44]

इस प्रकार राजनीति ने खेतिहर किसान एवं गरीब जनता व निम्न वर्गीय व्यक्तियों को कुछ हद तक शोषण से मुक्त किया है । सामान्य जनता को लोकतंत्र, संविधान सभा एवं स्वतंत्रता का अर्थ राजनीति ने समझाया है । "माटी की महक" की गौरी, कालीचरण और मैनू काका राजनीतिक चेतना से प्रभावित हैं । निम्न जाति के समक्ष भाषण देता हुआ कालीचरण कहता है - "संविधान का अर्थ है गरीब हरिजनों को, जो हजारों वर्षों से तिरस्कृत रहते

आये हैं, समाज में समानता का अधिकार दिलाना ।"[45] मास्टर सुग्गन लोकतंत्र के मूल्यों को उद्घाटित करते हुए कहता है -"सब को बोलने की स्वतंत्रता दी है, सब को समान अधिकार दिया है, मताधिकार से बड़ा अधिकार है, सबको व्यक्तित्व प्रदान किया जा रहा है ।"[46] राजनीतिक चेतना के माध्यम से आज व्यक्ति उन्नतिशील हो रहा है । "सबहिनचावत राम गोसाईं" उपन्यास में इस तथ्य को इस प्रकार स्पष्ट किया है ----"महात्मा गांधी और पंडित जवाहर लाल नेहरू ने देश के जानवरों से गये बीत आदमियों को मनुष्य की कोटि में लाकर खड़ा कर दिया है । "[47]

करैता गांव भी राजनीतिक चेतना स्पष्ट परिचायक है । "करैता गांव की पंचायतें अब मलिकाने के चबूतरे पर नहीं होती । अब इन पंचायतों में ठाकुर जैपाल सिंह मुखिया के आसन पर नहीं बैठते, अब गांव के लोग राय और फैसले के लिए उनका मुंह नहीं ताकते ।"[48] ग्रामीण परिवेश में राजनीति ने जमींदारी प्रथा या सामन्तशाही को सर्वाधिक आघात पहुँचाया । उक्त विवेचन में राजनीतिक चेतना से प्रभावित उज्ज्वल पक्ष का स्पष्टीकरण किया । भारतीय जन-जीवन का एक श्यामल पक्ष भी है , जो राजनीतिक चेतना से प्रभावित है । इसने हमारे व्यक्तिगत, सामाजिक, धार्मिक ,आध्यात्मिक तथा नैतिक और राजनीतिक मूल्यों को प्रभावित किया । इससे प्रभावित नेता आये दिन हड़ताल गुण्डागर्दी ,आगजनी की घटनाओं द्वारा निजी स्वार्थों की पूर्ति करते हैं । "धरती धन न अपना" का काली भी डा० विशनदास के सम्पर्क में आकर गांव के चौधरी के प्रति विद्रोह करता है । यह नहीं आज गांवों की स्थिति इतनी दयनीय हो गयी है कि "यह गांव सचमुच रहने के लायक नहीं रह गया है । गांव में कोई किसी का दुख दर्द नहीं सुनता है ।"[49] इस प्रकार राजनीतिक चेतना ने व्यक्ति जीवन को अनेक विसंगतियों का शिकार बना दिया है । भारतीय जन जीवन, परिवार ,खान पान, रहन-सहन , आचार विचार तथा आदर्श सभी परिवर्तन हो गया है ।

समकालीन राजनीतिक चेतना के कारण भाई-बहन,पति-पत्नी,पिता-पुत्र

आदि के संबंध बदल रहे हैं । राम लाल की बहन कलावती धर्मेन्द्र के साथ शारीरिक संबंध स्थापित कर गर्भ धारण कर लेती है , तो राम लाल को अनुचित नहीं लगता । वह कहता है - "आ गांव वाले सालो, की क्यों छाती फटती है । धरमेन्दर भैया ने जो कुछ किया है तो मेरी ही बहिन के साथ किया है ।"[50] इस प्रकार राजनीतिक धरातल पर टूटते हुए पति पत्नी के संबंधों का चित्रण कमलेश्वर की "काली आंधी" के पात्र मालती और जग्गू, 'प्रश्न और मरीचिका' में रूपा और शिवलोचन शर्मा के माध्यम से अंकित है । अर्थ एवं राजनीति के आकर्षण में रूपा नारी अपना मान सम्मान तथा सतीत्व को बेच देती है । "सामर्थ्य और सीमा" का नेता जोखनलाल सरकार को लूट रहे हैं उनका लक्ष्य जनहित नहीं है, बल्कि रूपया कमाना है । वह उद्योगपति रतनचन्द्र मकोला से रूपया ऐंठता है । युगीन राजनीति व्यक्तिपरक हो जाने से लोकतंत्र के मूल्य टूट रहे हैं । नेता चुनाव जीतकर अपना कोटा पूरा कर रहे हैं । जमाखोरी, भ्रष्टाचार, मिलावट, झूठे मुकदमें, चालबाजी, उचित दर की खोली गयी सरकारी दुकानों से गरीब जनता को लाभ नहीं होता है ।

साठोत्तर युग की राजनीति शहरों से लेकर गांवों तक भ्रष्ट हो गयी है । "महाभोज" का दा-साहब और सुकुल बाबू इसमें उदाहरण है । दा-साहब हरिजन बिसू की हत्या करवाकर, सच्चाई, ईमानदारी तथा न्यायपूर्ण कार्यकर्त्ता सक्सेना का तबादला करवा देता है । उसके अनुसार काम करने वाला "मशाल" समाचार का सम्पादक, अपना काम निकाल लेता है । ऐसा ही "समय साक्षी है" का तिमिरवरन नेता है ,"वह भीतर से उतने ही रीति नीति के धनी कूटनीतिज्ञ हैं ।"[51] आजादी के पश्चात राजनीति आदर्शपूर्ण थी तो सन् 1960 के पश्चात् उतनी ही भ्रष्ट होती गयी है जिसका प्रभाव गांवों पर विशेषत: परिलक्षित है । राजनीतिक चेतना से ही शहरों तथा गांवों में अनेक वर्ग बने , यही कारण है कि मध्यम वर्ग और उच्च वर्ग व निम्न वर्ग के बीच खाई दिनोंदिन गहरी होती जा रही है और राजनीतिक मूल्यों का विघटन हो रहा है ।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि राजनीतिक चेतना के

फलस्वरूप जहाँ एक ओर निम्न वर्ग, निम्न जाति एवं अनपढ़ ग्रामीण वर्ग में अपने अधिकारों के प्रति नवीन जागृति एवं नवीन चिन्तन आया वहाँ दूसरी ओर स्वार्थपूर्ण तथा छिछली राजनीति के कारण आपसी संबंध एवं परम्परागत मूल्यों का ह्रास हो रहा है ।

निष्कर्ष :-

समग्र अध्याय के विवेचन से इस लक्ष्य पर पहुंचा जा सकता है कि पूर्व-वर्ती राजनीति आदर्श एवं राजनीतिक मूल्यों से युक्त थी । यद्यपि उस समय राजनीति में आपस मतभेद के कारण दलबंदी आरम्भ हो गयी थी, किन्तु फिर भी गांधी तथा नेहरू के आदर्श राजनीति में स्थापित थे । वस्तुत: कहा जाय तो राजनीति का पतन महात्मा गांधी की मृत्यु के साथ ही आरम्भ हो चुका था, जो सन् 1960 के आते आते स्वार्थपरक, भ्रष्टाचार, भाई भतीजावाद, साम्प्रदायिक, जातीयता, प्रान्तीयता, भाषावाद आदि के संकीर्ण घेरों में संकुचित हो गयी । राजनीति गतिविधियों से देश में नई भाव क्रान्ति आई और हमारे सामाजिक, धार्मिक, राजनीति तथा नैतिक मूल्यों को पतनोन्मुख किया । "आधा गांव" "अलग अलग वैतरणी" "रागदरबारी", सूखता हुआ तालाब , जल टूटता हुआ, धरती धन न अपना, महाभोज, आदि उपन्यासों में राजनीति से उत्पन्न गांव की विषम स्थितियों का अंकन किया गया है । यही कारण है कि उपन्यसों में गांव की टूटन, घुटन, आपसी मत भेद, टूटते हुए पारिवारिक संबंध एवं कसमसाहट को अभिव्यक्ति किया है । इसी कारण ग्रामीण जीवन-मूल्यों ,धारणाओं, जीवनादर्शों , आचारो-विचारों आदि में व्यापक परिवर्तन आ रहा है ।

सन् 1960 के पश्चात् की राजनीतिक गुटबंदी ने भारतीय आर्थिक प्रणाली के साथ साथ भारतीय जनजीवन को भी आकर्षित किया है । यद्यपि भारतीय नेताओं ने पंचवर्षीय योजनाओं से देश को सुखी समृद्ध बनाने की कोशिशें कीं किन्तु आशानुकूल सफलता प्राप्ति न हो सकी । जिसका मुख्य कारण

राजनीति गतिविधियाँ और आपसी स्वार्थ है । यद्यपि अनेक बाह्य कारण भी सहायक थे । समकालीन युद्धों ने भारतीय अर्थ व्यवस्था को प्रभावित किया ही, साथ ही भारतीय राजनीति और अन्तर्राष्ट्रीय नीति को अछूता न छोड़ा। परिणाम यह हुआ कि राजनीति में अविश्वास,छल कपट, कुचालों,पैंतरेबाजी, स्वार्थ आदि कुष्प्रवृत्तियाँ प्रवेश कर गयीं । जिसके कारण , भाईचारे, सदभाव, एकता, सहयोग, सेवाभाव, त्याग, न्याय ,राष्ट्रीय प्रेम आदि मूल्य राजनीति में लुप्त होने लगे । पत्थरों का शहर, महाभोज, रीछ, तमस, जिन्दाबाद, मुरदाबाद, रिहर्सल , कभी न छोड़े खेत, आधा गाँव, प्रश्न और मरीचिका, सामर्थ्य और सीमा, जुलूस, पानी के प्राचीर, आदि उपन्यासों में राजनीति से उत्पन्न विषम स्थितियों का चित्रण किया गया है ।

यह यह कहना समीचीन होगा कि पूर्ववर्ती उपन्यासकारों ने राजनीति प्रधान उपन्यास भी लिखे हैं । और उनके उपन्यासों में आदर्श तथा नैतिक मूल्य भी मिलते हैं । इनके पात्र राजनैतिक पैंतरेबाजी, कुचाले, भ्रष्टाचार करते हुए भी अन्त में उसे अनुभव करके प्रायश्चित भी करते हैं । यथा- प्रश्न और मरीचिका की रूपा शर्मा ,शिवलोचन, आदि हैं । परन्तु समकालीन लेखकों के पात्र उक्त भ्रष्टाचार को राजनीति का आवश्यक अंग मानते हैं । यह उल्लेखनीय है कि "राग दरबारी " का रूप्पन समकालीन राजनति का बखिया उधेड़ता हुआ कहता है कि -"यह तो पालिटिक्स है, इसमें बड़ा बड़ा कमीनापन चलता है ।...... पिता जी किस रास्ते में है उसमें इससे भी आगे कुछ करना पड़ता है । दुश्मन को , जैसे भी हो, चित्त करना चाहिये ।"[52] इसी प्रकार "पत्थरों का शहर" का ठाकुर राम भजन सिंह, महाभोज का, दा-साहब, सुकुल बाबू,"काली आँधी" की मालती , अलग अलग वैतरणी का सुखदेव, आदि कूटनीतिज्ञ हैं, जो "राजनीति" में सब चलता है" नीति का अक्षरक्षः पालन करते हैं । अंत में कहा जा सकता है कि साठोत्तर युग की राजनीति धूर्तता, बेईमानी एवं भ्रष्टाचार का दूसरा नाम है । राजनीति के कारण पिछड़े तथा अनुसूचित वर्ग में चेतना तथा जागरूकता आई किन्तु इसके साथ इसने प्राचीन जीवन-मूल्यों पर प्रश्न चिन्ह लग गया है । अतः वर्ग संघर्ष के नये मूल्य उभरे जातियगत

मूल्यों का हृास का ह्रास हुआ । आरक्षण, परिवार नियोजन तथा जनसंख्या कम करने एवं देश विकास के कार्य किये जा रहे हैं । इस प्रकार राजनीतिक ने नारी जागृति तथा अछूत वर्ग को उत्थान, उन्नति व समानता के अधिकार जो प्रदान किये, इससे धार्मिक, नैतिक, आध्यात्मिक ,सामाजिक, व्यक्तिगत आदि मूल्यों का हृास हुआ ।

-::-